B.Ed – 2nd Year **Nakul Sah**

Pedagogy of Biological Science **Assistant Professor**

Course- 7 (b)

Lecture - 38

शिक्षक–अभिभावक संघ

शिक्षा की गुणवत्ता में अभिभावकों और शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। कहा भी जाता है कि बालक एक – चौथाई शिक्षा शिक्षकों से, एक चौथाई स्वयं से तथा आधी शिक्षा अपने माँ बाप या अभिभावक से सीखता है। यह स्थिति विद्यालयों में शिक्षक–अभिभावक संघ की स्थापना के महत्व को प्रतिपादित करती है। बालक अभिभावकों के समक्ष शिक्षक की तुलना में कही अधिक रहता है अतः वे शिक्षक से अनेक क्षेत्रों के बारे में अधिक जानते हैं। अतः अभिभावकों का बालकों के शैक्षिक विकास में सहयोग लिया जाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस संघ की नियमित बैठकों में जहां अभिभावकों को अपने बालक तथा समुदाय के बालकों की शैक्षिक समस्याओं को निकट से जानने और समझने का अवसर मिलता है वहीं विद्यालय को सभी विद्यार्थियों की पारिवारिक,सामाजिक, आर्थिक, वैयक्तिक समस्याओं तथा विद्यालय से समुदाय की अपेक्षाओं का ज्ञान होता है।

शिक्षक अभिभावक संघ के कार्य

1. शिक्षकों का छात्रों के घरों पर सम्पर्क –

प्रायः हमारे विद्यालयों में शिक्षक तभी किसी विद्यार्थी के घर जाता है जब विद्यार्थी किसी समस्या से ग्रस्त हो। यह कदम विद्यार्थी की समस्या के

NAKUL KUMAR

जन्म से पूर्व ही समस्या के समाधान में योगदान देगा। इससे विशेषकर प्राथमिक स्तर पर अपव्यय एवं अवरोधन जैसी समस्याओं को रोकने में सहायता मिलेगी। पारिवारिक वित्तीय संकट, सामाजिक समस्याओं तथा विवाह आदि के कारण विद्यालय छोडने वाले विद्यार्थियों के लिये अभिभावक शिक्षक संघ इस दिशा में समाधान दे सकता है।

2. अभिभावकों का विद्यालय से सम्पर्क –

जिस प्रकार शिक्षकों का विद्यार्थियों के घर और परिवार से सम्पर्क रखना आवश्यक है उसी प्रकार शिक्षक अभिभावक संघ में प्रगाढ़ता लाने का दूसरा कदम अभिभावकों का विद्यालय में आगमन होना चाहिये। इससे अभिभावकों और विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रति विश्वास बढ़ता है विद्यालय के उद्देश्यों और उसमें अभिभावक के सहयोग को लेकर कार्यक्रम होना चाहिए।

3. शिक्षण कार्यक्रम और अभिभावक सहभागिता –

यदि विद्यालय वास्तव में अभिभावकों की आकांक्षाओं के अनुरूप कार्यक्रम आयोजित करना चाहता है तब यह आवश्यक ही नहीं अपरिहार्य भी होगा कि विद्यालय कार्यक्रमों की योजना निर्माण के समय अभिभावकों से विद्यालय प्रधान अथवा प्रभारी परामर्श करे और उनकी भावना के अनुरूप और उपयुक्त समय पर ये कार्यक्रम आयोजित किये जायें।

4. अभिभावक समूहों में शिक्षक सहभागिता –

विभिन्न रूचि और क्षमता वाले अभिभावकों को विभिन्न समूहों, विद्यालय सम्पर्क विकास, जनरंजन आदि के लिये आमंत्रित किया जा सकता है। उदाहरणार्थ – सामुदायिक खेलकूद कार्यक्रम, खेल में रूचि लेने वाले

NAKUL KUMAR

अभिभावकों के साथ और सामुदायिक मेले एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम उन अभिभावकों के साथ जो इस प्रकार के कार्यक्रमों में रूचि रखते हैं। इस सम्बन्ध में अभिभावक एवं शिक्षक विचार–विमर्श कर विद्यालय एवं समुदाय के हितार्थ विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं।

5. विद्यालय उददेश्य एवं प्रगति के सन्दर्भ में सूचना –

विद्यालय से अभिभावकों को जोडे रखने के लिये अच्छे विद्यालय निरन्तर विद्यालय के लक्ष्य, कार्यक्रमों तथा प्रगति के सम्बन्ध में अभिभावकों को सूचित करते रहते हैं। कुछ विद्यालय त्रैमासिक या अर्द्धमासिक विद्यालय समाचार बुलेटिन भी अभिभावकों को भेजते हैं।

6. अभिभावक समूहों में शिक्षक सहभागिता –

विभिन्न रूचि और क्षमता वाले अभिभावकों को विभिन्न समूहों में विद्यालय विकासार्थ विचार–विमर्श के लिये आमंत्रित किया जा सकता है। उदाहरणार्थ – अभिभावकों को सूचित करने के और भी माध्यम हैं जिनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं –

1. रिपोर्ट कार्ड
2. वैयक्तिक अनौपचारिक पत्र व्यवहार
3. छात्र प्रगति रिपोर्ट
4. अध्यापक शिक्षक कॉन्फ्रेन्स।

NAKUL KUMAR

7. विद्यालय सामुदायिक केन्द्र और शिक्षक अभिभावक संघ –

विद्यालय को समुदाय के निकट लाने में शिक्षक अभिभावक संघ विद्यालय को एक सामुदायिक केन्द्र के रूप में भी विकसित कर सकते हैं। जहां समुदाय विद्यालय संसाधनों का उपयोग कर सकता है। इस प्रकार अभिभावक शिक्षक अपने समुदाय के विकास की योजना बना सकते हैं तथा एक साथ मिलकर विद्यालय और समुदाय दोनों के विकास में सहयोग दे सकते हैं।

8. अभिभावक सप्ताह का आयोजन –

विद्यालय अभिभावक शिक्षक कार्यक्रम को बढावा देने के लिये अभिभावक शिक्षक सप्ताह का आयोजन कर सकते हैं जिसमें अभिभावक शिक्षक सम्बन्धी विविध कार्यक्रमों को आयोजित किया जा सकता है।

★★★★★

NAKUL KUMAR